International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 03-11-2021, Accepted: 19-11-2021, Published: 04-12-2021
Volume 7; Issue 6; 2021; Page No. 58-60

'रामचरितमानस' और 'बज्जिका रामायण' की माता सुमित्रा का तुलनात्मक विश्लेषण

रश्मि किरण
शोध छात्रा, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहार, भारत

सारांश
मातृत्व एक ऐसी गरिमा है, जिसके आगे सभी नतमस्तक होते है। जन्म देने के कारण माता जननी कहलाती है। महर्षि बाल्मीकि ने रामायण में इस शब्द को चरितार्थ किया है। यथाः ''जननी जन्मभूमिष्च स्वर्गादऽपि गरीयसी।''
आज हासोन्मुखी नैतिकता के युग में धन से सबकुछ खरीदा जा सकता है, किन्तु माता का स्नेह और उसकी ममता नहीं खरीदी जा सकती है। माँ अपनी संतानों को असीम स्नेह देती है। वह उसे अपना स्निग्ध दूध पिलाती है एवं ज्ञान–दान देती हुई, उसे एक सुयोग्य नागरिक बनाती है।
महाकाव्य द्वय में सुमित्रा पत्नी माता एवं विमाता–इन तीनों रुपों में वर्णित हुई है। उनके ये तीनों रुप उसके चरित्र की कसौटी है। सुमित्रा दोनों ही महाकाव्यों की सर्वश्रेष्ठ मातृत्व की धनी है, वह सर्वश्रेष्ठ माता है। वह लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न जैसे वीरवर की माता है साथ ही श्रीराम एवं भरत की विमाता भी है। वह राम की माता कौशल्या एवं भरत माता कैकेयी से सर्वथा भिन्न है। भरत माता कैकेयी तो सर्वविदित है कि अपने पुत्र मोह के लिए सौत पुत्रों को वन भेज देती है इस कारण उसे वैध्वय की जिंदगी गुजारनी पड़ती है तथा सारे संसार में अपने कुकृत्य के कारण उन्हें शर्मिंदगी झेलनी पड़ी, वहीं माता कौशल्या अपने प्राणो से प्यारे पुत्र को वन जाते हुए देखकर सुध–बुध खो देती है। लेकिन सुमित्रा अपनी संतानों को लेकर लेश मात्र भी स्वार्थिनी नहीं है। अपितु वह खुशी–खुशी अपने पुत्र को राम की सेवा करने के लिए वन भेज देती है। वह अपने और सौत पुत्रों के साथ कोई भेद भाव नहीं करती है। वह एक विवेकशीला एवं संतानों की वास्तविक हितैषिणी एवं आदर्श माता है।
सुमित्रा वीर जननी है। उनके दोनों ही पुत्र वीर है। उन्होंने निडर होकर सारे कार्य किए। सुमित्रा कर्त्तव्य पर भावुकता को हावी नहीं होने देती है। वह अपने पुत्र मोह के वशीभूत होकर सन्मार्ग से रोकती नहीं है। वह तो पुत्र के कल्याण को देखकर उसका मार्गदर्शन करती हुई धर्मरक्षार्थ, जन कल्याण के लिए श्रीराम के साथ वन भेज देती है।
माता सुमित्रा में कल्याणमयी भावनाएँ निहित हे। उसने अपने दोनों पुत्रों में समाज एवं राष्ट्र कल्याण की भावना को विकसित किया।
इसप्रकार, हम कह सकते है कि लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न में यह सब गुण माता सुमित्रा के कारण ही है। इस तरह दोनों ही महाकाव्यों की माता सुमित्रा कल्याणमयी है। उसका चरित्र आज और अधिक अनुकरणीय है।

मूलशब्दः मानस, बज्जिका, रामायण, सुमित्रा, रामकथा

प्रस्तावना
मातृत्व एक ऐसी गरिमा है, जिसके आगे सभी नतमस्तक होते है। जन्म देने के कारण माता जननी कहलाती है। महर्षि बाल्मीकि ने रामायण में इस शब्द को चरितार्थ किया है। यथाः–

''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादऽपि गरीयसी।''

आज हासोन्मुखी नैतिकता के इस युग में धन से सबकुछ खरीदा जा सकता है, किन्तु माता का स्नेह और उसकी ममता नहीं खरीदी जा सकती है। माँ अपनी संतानों को असीम स्नेह देती है। वह उसे अपना स्निग्ध दूध पिलाती है एवं ज्ञान–दान देती हुई, उसे एक सुयोग्य नागरिक बनाती है। सुमित्रा पुत्र वीरवर लक्ष्मण भी एक ऐसा ही चरित्र है।
महाकाव्य द्वय में सुमित्रा पत्नी माता एवं विमाता–इन तीनों रुपों में वर्णित हुई है। उनके ये तीनों रुप उसके चरित्र की कसौटी है। किंतु, यहाँ उनके मातृत्व पर विचार करना ही हमारा लक्ष्य है।
सुमित्रा न केवल महाकाव्य द्वय की सर्वश्रेष्ठ मातृत्व की धनी है, अपितु, संसार की सभी माताओं में भी वह सर्वश्रेष्ठ है। वह राम की माता कौशल्या एवं भरत माता कैकेयी से सर्वथा भिन्न है। भरत माता कैकेयी तो सर्वविदित है कि अपने पुत्र मोह के लिए सौत पुत्रों को वन भेज देती है इस कारण उसे वैध्वय की जिंदगी गुजारनी पड़ती है तथा सारे संसार में अपने कुकृत्य के कारण उन्हें शर्मिंदगी झेलनी पड़ी, लेकिन सुमित्रा अपनी संतानों को लेकर लेश मात्र भी स्वार्थिनी नहीं है।
दोनों ही महाकाव्यों की सुमित्रा के मातृत्व का आकलन करने के लिए जब सूक्ष्म दृष्टि डालते है, तब निम्नलिखित विशेषताएँ उभरकर सामने आती है।

आदर्श माता
दोनों ही महाकाव्यों में सुमित्रा एक आदर्श माता के रुप में चित्रित हुई हैं। दो वीरवर पुत्र लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न तथा दो सौत पुत्रों राम एवं भरत की माता है। वह अपने और सौत–पुत्रों के साथ कोई भेदभाव नहीं करती है। वह एक विवेकशीला एवं संतानों की वास्तविक हितैषिणी एवं आदर्श मातृत्व की धनी है।
'मानस' में सुमित्रा अपने पुत्र लक्ष्मण को राम के साथ वन जाती हुई देखती है तो अपने आप को धन्य मानती है वह कहती है कि संसार में वही माता धन्य है, जो श्रीराम की चरणानुगामी पुत्र को जन्म देती है, यथा–

''पुत्रवती जुवती जग सोई।
रघुपति भगतु जासु सुतु होई।।''

वही 'बज्जिका रामाएन' में अपने प्राणों से प्रिय पुत्र लक्ष्मण को श्रीराम के साथ वन जाने की आज्ञा देती है। यथा–

''कहलन रघुवर तोरा साथे लछुमन जंगल जाएत।
तोहरा छाया, तोरे सेबा में सुख असली पाएत।।''

सुमित्रा अपने पुत्र को श्रीराम के साथ खुशी–खुशी वन जाने देती है, वह श्रीराम से कहती है कि तुम्हारे साथ रहकर तुम्हारी सेवा में असली सुख है। अपने पुत्र लक्ष्मण का श्रीराम के प्रति अनुराग और सेवा भाव देखकर वह आनन्दित होती है तो उधर छोटा पुत्र शत्रुघ्न भी भरत का प्रिय बना हुआ है। भरत और शत्रुघ्न दोनों ही दो शरीर एक प्राण की तरह रहते थे। दोनों भाई छाया–काया के तरह साथ रहते है। यथा–

''सत्रोघ्न हम्मर आउर हम ओक्कर प्रिय परछॉही।''

सुमित्रा संसार की ऐसी माताओं को कोसती है जो राम विमुख संतान से अपना हित मानती है। पशु समान पुत्र को जन्म देने से अच्छा बाँझ रहना उन्हें प्यारा है।

''नतरु बाँझ भली बादि विआनी।
राम बिमुख सुत ते हित जानी।।''

'बज्जिका रामाएन' में तो वह अपने एक पुत्र को श्रीराम को अर्पित कर देती है। वह कहती है कि अपने आँचल की सारी ममता तुम्हारे सुख के लिए है।
इस प्रकार, सुमित्रा एक आदर्श माता है, क्योंकि वह अपने पुत्रों को सौत–पुत्रों की सेवा करने के लिए उत्प्रेरित करती है। उनके पुत्र सौम्य, गुणवान एवं मातृप्रेम से ओत–प्रोत है। कहा भी गया है कि पुत्र का न होना और होकर मर जाना अत्यधिक कष्टदायी है परन्तु पुत्र का कुपुत्र हो जाना सर्वाधिक कष्ट की बात है। सुमित्रा के दोनों पुत्र आदर्श एवं चरित्रवान है जो मातृत्व को ही सर्वोपरि मानते है।

वीर–प्रसू

सुमित्रा वीर जननी है। उनके दोनों ही पुत्र वीर है। लक्ष्मण ने श्रीराम के साथ मिलकर बहुत से आततायी राक्षसों का संहार किया है। सुमित्रा पुत्र लक्ष्मण के रग–रग में वीरता भरी हुई थी, चाहे महर्षि विश्वामित्र का यज्ञ रक्षा का काम हो अथवा शुर्पनखा, मेघनादादि राक्षस–राक्षसियों का सामना करना पड़ा हो उन्होंने निडर होकर सारे कार्य किए। युद्ध के अलावे वाकयुद्ध में भी वह निपुण थे। परशुराम जी से भी नहीं डरे। उनकी वीरता सर्वदा सराहनीय है।
बज्जिका रामाएन' में महापराक्रमी राक्षस मेघनाद को मारने पर इन्द्र खुशी से उन्मत हो गए और महावली लक्ष्मण की प्रशंसा करते हुए कहते है

''धन्न–धन्न सौमित्र महाबली धन्न–धन्न तू बीर।''

कर्तव्यपरायण माता

सुमित्रा एक कर्तव्यपरायण माता है। भावुकता को वह अपने कर्तव्य पर हावी नहीं होने देती है। 'मानस' में उसके कर्तव्ययुक्त मातृत्व के दर्शन होते है। लक्ष्मण से राम–वनवास का कारण जानने पर वह सहम जाती है। यथा–

''गई सहमि सुनि वचन कठोरा।
मृग देखि दब जनु चहुँ ओरा।।''

माता को इस तरह सहमें देखकर लक्ष्मण भी डर जाते है कि अब माता वन जाने की आज्ञा नहीं देगी किन्तु उसके उलट सुमित्रा तुरंत ही लक्ष्मण को वन जाने की इजाजत देती हई कहती है कि तुम्हारे ही भाग्य से राम वन जाते है, इसमें कोई दूसरा करण नहीं है। सम्पूर्ण पूण्यों का यही फल है कि श्री सीतारामजी के चरणों में सहज प्रेम हो

''तुम्हारहि भाग रामु बन जाहीं।
दूसर हेतु तात कछु नाहीं।।
सकल सुकृत कर बड़ फलु एहू।
राम सीय पद सहज सनेहू।।''

'बज्जिका रामाएन' में तो लक्ष्मण के बोलने से पहले ही सुमित्रा अपने पुत्र को श्रीराम के चरणों में अर्पित कर देती है।

''तोरा सेबा में हम बेटा, एक पुत्र अरपइले।
अपना अँचरा के सब ममता तोरा सुख ला देइले।।''

सुमित्रा पुत्र मोह के वशीभूत होकर सन्मार्ग से रोकती नहीं है। वह तो पुत्र के कल्याण को देखकर उसका मार्गदर्शन करती हुई धर्मरक्षार्थ, जन कल्याण के लिए श्रीराम के साथ वन भेज देती है।

उपदेशिका माता

दोनों ही महाकाव्यों की सुमित्रा एक उपदेशिका माता रुप में भी आलोकित होती है। 'मानस' में वह वन गमन के समय लक्ष्मण से कहती है कि तुम्हारी माता बैदेही है तथा श्रीराम पिता के समान प्यार करेगें। जहाँ श्रीराम निवास करेंगे वही अवध होगा

''तात तुम्हारि मातु बैदेही।
पिता राम सब भाँति सनेही।
अवध तहाँ जहँ राम निवासू।
तहँई दिवसु जहँ मानु प्रकासू।।''

'बज्जिका रामाएन' में तो वह लक्ष्मण से श्रीराम की सेवा करने के लिए कहती है। वह श्रीराम से कहती है कि जब तुम थक जाओगे तो तुम्हारे पैर दबा देगा सुख–दुख में सहभागी बनकर तुम्हारी पीड़ा मिटायेगा और जब तुम सोओगे तो धनुष बाण लेकर तुम्हारी रक्षा करेगा।

''सब दिन तोरा साथ रहल इ, तोरे साथे जाएत।
सुख–दुख में सहभागी बनके तोहर व्यथा मिटाएत
कंद मूल फल ला के देतओ थकबऽ गोर दबतओ
सुतला पर ले धनुस बान रच्छा ला पहरा देतओ।''

कल्याणमयी माता

माता सुमित्रा में कल्याणमयी भावनाएँ निहित हे। उसने अपने दोनों पुत्रों में समाज एवं राष्ट्र कल्याण की भावना को विकसित किया। जब श्रीराम वन जाने लगते है, तब वह अपने पुत्र लक्ष्मण को वन जाने की आज्ञा देती है। लक्ष्मण चरित्रवान है, जिससे वह वन में आततायी मेघनादादि राक्षसों का विनाश तो करते हैं साथ ही रात्रि के एकांत में पंचवटी में सुन्दर वेषधारिणी शूर्पनखा के प्रणय की याचना पर भी धीर गम्भीर बने रहते है। वह अपनी भाभी सीता के चरणों का सेवक है। उसने सीता के चरणो के अलावे कभी भी उसके मुख को ठीक से भी नहीं देखा इसी कारण वह सीता के पैरों के नुपूर के अलावे उसके अंग का कोई भी आभूषण नहीं पहचान पाता है। ऐसे संस्कार सिर्फ सुमित्रा पुत्र में ही था।
एवंविध, सुमित्रा का ज्येष्ठ पुत्र लक्ष्मण श्रीराम के चरणानुरागी हुआ तो छोटा पुत्र शत्रुघ्न भरत का अनुगामी बनकर अयोध्या की सेवा एवं रक्षा में जुटा रहा है। इस तरह सुमित्रा का दोनों पुत्र

देश के अन्दर एवं बाह्य दोनों की रक्षा एवं सेवा में समर्पित रहा है। इसमें माता सुमित्रा की ही शिक्षा दिखलाई पड़ती है क्योंकि माता ही अपनी संतान की प्रथम गुरु मानी जाती है। इस प्रकार, हम कह सकते है कि लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न में यह सब गुण माता सुमित्रा के कारण ही है। इस तरह दोनों ही महाकाव्यों की माता सुमित्रा कल्याणमयी है। उसका चरित्र आज और अधिक अनुकरणीय है।

संदर्भ सूची

1. 'रामचरितमानस', तुलसीदास, प्रकाशक गोविन्दभवन कार्यालय, गीताप्रेस गोरखपुर, संस्करण 129 वाँ
2. 'बज्जिका रामाएन' डॉ० अवधेश्वर अरुण, प्रकाशक हिन्दी प्रचार प्रेस त्यागराज नगर चेन्नई, संस्करण द्वितीय